खेत बचाएँ, भविष्य बचाएँ

राजेश गुप्ता

खेतों को बचाना अब केवल किसानों की सुरक्षा का विषय नहीं, बल्कि मानवता के भविष्य को सुरक्षित करने का संकल्प है। स्वस्थ खेत पौष्टिक अन्न देते हैं, पौष्टिक अन्न स्वस्थ समाज का निर्माण करता है, स्वस्थ समाज सशक्त अर्थव्यवस्था की नींव रखता है और सशक्त अर्थव्यवस्था एक स्वस्थ पृथ्वी के निर्माण में योगदान देती है। इसलिए भविष्य की राह ऐसी कृषि से होकर गुज़रती है, जहाँ खेतों को केवल उत्पादन का माध्यम नहीं, बल्कि जीवंत पारिस्थितिकी तंत्र के रूप में विकसित किया जाए और उत्पादन के साथ-साथ भूमि, जल तथा जैव विविधता के संरक्षण को भी समान महत्व दिया जाए।

मानवता का भविष्य कृत्रिम बुद्धिमत्ता, वित्तीय बाज़ारों या गगनचुंबी इमारतों से तय नहीं होगा। उसका निर्णय उस मौन, किंतु सबसे बुनियादी शक्ति से होगा, जिस पर जीवन का आधार टिका है- हमारे खेतों की सेहत। हमारी थाली का हर निवाला, नदियों का प्रवाह, बच्चों का स्वास्थ्य, अर्थव्यवस्था की समृद्धि और समाज की स्थिरता अंततः उसी भूमि पर निर्भर है, जो हमारे लिए अन्न उपजाती है। यदि खेत जीवंत पारिस्थितिकी तंत्र के रूप में काम करना बंद कर दें, तो मानवता केवल कृषि ही नहीं खोएगी, बल्कि वह पर्यावरणीय आधार भी खो देगी, जिस पर पूरी सभ्यता टिकी हुई है। सच तो यह है कि खेत केवल भोजन नहीं उगाते, वे जीवन, अर्थव्यवस्था और सभ्यता का भविष्य गढ़ते हैं।

कृषि को प्रायः केवल उपज पैदा करने वाले क्षेत्र के रूप में देखा गया है, जबकि खेतों से मिलने वाली अनेक महत्त्वपूर्ण सेवाओं की अनदेखी होती रही है। एक जीवंत खेत कार्बन को अवशोषित करता है, भूजल का पुनर्भरण करता है, जैव विविधता का संरक्षण करता है, स्थानीय जलवायु को संतुलित रखता है, परागण करने वाले जीवों को सहारा देता है, समुदायों का पोषण करता है और आजीविका को बनाए रखता है। इस प्रकार

लेखक वरिष्ठ भारतीय पुलिस सेवा अधिकारी (सेवानिवृत्त) हैं। ईमेलः gupta7rajesh@gmail.com

खेत पारिस्थितिकी, अर्थव्यवस्था और जनस्वास्थ्य तीनों की आधारभूत इकाई है।

इस लेख का केंद्रीय विचार अत्यंत गहरा है। खेतों को बचाना अब केवल किसानों की रक्षा का प्रश्न नहीं, बल्कि पूरी मानवता के भविष्य को सुरक्षित रखने का संकल्प है। स्वस्थ खेत पौष्टिक भोजन देते हैं, पौष्टिक भोजन स्वस्थ समाज का निर्माण करता है, स्वस्थ समाज सुदृढ़ अर्थव्यवस्था की नींव रखता है और सुदृढ़ अर्थव्यवस्था एक स्वस्थ धरती के निर्माण में सहायक होती है। सभ्यता का भविष्य केवल तकनीकी प्रगति से सुरक्षित नहीं होगा, बल्कि इस बात से तय होगा कि हम अपने जीवंत प्राकृतिक परिवेश को किस हद तक पुनर्जीवित कर पाते हैं।

खेतः मानवता की पहली पाठशाला

विद्यालयों, विश्वविद्यालयों और प्रयोगशालाओं की स्थापना से बहुत पहले खेतों ने मानवता को अवलोकन, धैर्य, सहयोग, गणित, मौसम विज्ञान तथा पारिस्थितिकी का ज्ञान दिया। इन विषयों को औपचारिक नाम मिलने से भी पहले किसान मृदा वैज्ञानिक, जल वैज्ञानिक, वनस्पतिज्ञ, पोषण विशेषज्ञ और जोखिम प्रबंधक की भूमिका निभा रहे थे। प्रत्येक ऋतु एक प्रयोग, हर फसल एक सीख और प्रत्येक असफलता प्रकृति को अधिक गहराई से समझने का अवसर था ।

कारखानों में उत्पादन मशीनों और पूर्व निर्धारित प्रक्रियाओं पर निर्भर करता है, जबकि खेतों की उत्पादकता असंख्य जीवंत संबंधों पर टिकी होती है। मिट्टी में रहने वाले सूक्ष्मजीव, कवक, केंचुए, कीट-पतंगे, पक्षी, पेड़, वर्षा, सूर्य का प्रकाश और मनुष्य की देखभाल–ये सभी मिलकर खेत को उत्पादक बनाते हैं। आधुनिक शासन व्यवस्था और शिक्षा ने इन परस्पर संबंधों को अलग-अलग विषयों और विभागीय खाँचों में बाँट दिया। कृषि, स्वास्थ्य, जल और जैव विविधता अलग-अलग मंत्रालयों की ज़िम्मेदारी बन गए, जबकि प्रकृति ने ऐसी सीमाओं को कभी स्वीकार नहीं किया। अपनी उर्वरता खो चुकी मिट्टी अंततः पोषण की समस्या बनती है, प्रदूषित जल जनस्वास्थ्य संकट को जन्म देता है, जैव विविधता का क्षरण कृषि संकट का कारण बनता है और जलवायु परिवर्तन आर्थिक अस्थिरता में बदल जाता है। इन सभी का संगम खेत में होता है और यहीं से मानवता को परस्पर निर्भरता का संपूर्ण पाठ मिलता है। आज खेतों की सेहत एक निर्णायक मोड़ पर आ खड़ी हुई है।

धरती की पुकार

आज कृषि के सामने सबसे बड़ा खतरा प्राकृतिक तंत्रों का धीमा और अदृश्य क्षरण है। एक ओर किसानों से पहले से कहीं अधिक खाद्यान्न उत्पादन की अपेक्षा की जा रही है, तो दूसरी ओर प्राकृतिक संसाधन लगातार घट रहे हैं और जलवायु संबंधी अनिश्चितताएँ बढ़ रही हैं।

अनुमान है कि विश्व की लगभग 75 प्रतिशत मिट्टी सामान्य से अत्यंत खराब स्थिति में है। भारत में 60 प्रतिशत से अधिक सिंचित कृषि भूजल पर निर्भर है, जबकि अनेक जलभृतों का इतना अधिक दोहन हो चुका है कि उनकी प्राकृतिक भरपाई संभव नहीं रह गई है। परागण करने वाले जीवों की संख्या घट रही है और आधुनिक फसल किस्मों में प्रमुख तथा सूक्ष्म पोषक तत्त्वों की मात्रा दशकों पहले की तुलना में काफ़ी कम हो गई है। ये सभी स्थितियाँ आपस में जुड़ी हुई हैं और गहरे दबाव से जूझ रहे पारिस्थितिकी तंत्र की बिगड़ती दशा के संकेत हैं।

हरित क्रांति ने देश को खाद्यान्न संकट से उबार कर आत्मनिर्भरता की राह दिखाई, लेकिन आज चुनौतियों का स्वरूप बदल चुका है। अब लक्ष्य केवल पर्याप्त अन्न पैदा करना नहीं, बल्कि उत्पादन बनाए रखते हुए मृदा स्वास्थ्य को पुनर्जीवित करना, जल संरक्षण, जैव विविधता को पुनः समृद्ध बनाना और भोजन की पोषण गुणवत्ता बढ़ाना भी है। अगली कृषि क्रांति का लक्ष्य केवल उपज बढ़ाना नहीं, कृषि को पुनर्योजी बनाना भी होना चाहिए। इस दृष्टि से मिट्टी राष्ट्र की एक अमूल्य संपदा है।

प्रकृति की अदृश्य अर्थव्यवस्था

प्रत्येक उपजाऊ खेत के पीछे प्रकृति का एक विशाल और अदृश्य कार्यबल निरंतर काम करता है, जिसे आर्थिक गणनाओं में शायद ही कभी स्थान मिलता है। खरबों सूक्ष्मजीव पोषक तत्त्वों का पुनर्चक्रण कर मिट्टी की उर्वरता बढ़ाते हैं। केंचुए मिट्टी की संरचना सुधारते हैं और उसमें पानी के समावेश को बढ़ाते हैं।

मधुमक्खियाँ, तितलियाँ और पक्षी फसलों के परागण में सहायता करते हैं। शिकारी कीट प्राकृतिक रूप से हानिकारक कीटों को नियंत्रित करते हैं। वहीं, वृक्ष तापमान को संतुलित रखते हैं, वायु अपरदन को कम करते हैं और स्थानीय वर्षा-चक्र बनाए रखने में मदद करते हैं। ये सभी जीव मिलकर अरबों डॉलर मूल्य की ऐसी पारिस्थितिक सेवाएँ प्रदान करते हैं, जिनका स्थान कोई तकनीक नहीं ले सकती। इस प्रकार, प्रकृति की प्रत्येक प्रजाति एक कृषि श्रमिक है।

जैव विविधता के घटने और प्राकृतिक प्रक्रियाओं के कमज़ोर पड़ने के साथ किसान उस कमी की भरपाई उर्वरकों, कीटनाशकों और सिंचाई पर अधिक खर्च करके करने लगते हैं। परिणामस्वरूप, समाज को उन सेवाओं की कीमत चुकानी पड़ती है, जो स्वस्थ पारिस्थितिकी तंत्र से कभी निःशुल्क उपलब्ध थे। यह बढ़ती लागत पहले किसान के खाते में जुड़ती है और बाद में सब्सिडी तथा पर्यावरणीय पुनर्बहाली के खर्च के रूप में सरकारी खजाने पर भी बोझ बन जाती है। जैव विविधता प्रकृति की बीमा पॉलिसी है। इसलिए इसका संरक्षण कोई पर्यावरणीय विलासिता नहीं बल्कि आर्थिक आवश्यकता है।

जलः कृषि की जीवनधारा

यदि मिट्टी कृषि की नींव है, तो जल उसकी जीवनधारा है। विश्व में उपयोग किए जाने वाले मीठे पानी का लगभग 70 प्रतिशत और भारत में करीब 90 प्रतिशत हिस्सा कृषि के लिए उपयोग किया जाता है। बढ़ती आबादी और जलवायु परिवर्तन के बीच चुनौती यह है कि पानी की हर बूंद से अधिक पौष्टिक भोजन पैदा किया जाए। खेती का भविष्य फसल उत्पादकता नहीं बल्कि जल उत्पादकता तय करेगी।

भारत में भूजल का दोहन अब प्राकृतिक रूप से होने वाले उसके पुनर्भरण से अधिक हो गया है। इससे कृषि के साथ-साथ पेयजल सुरक्षा पर भी खतरा बढ़ रहा है। अनियमित मानसून, पिघलते हिमनद और बढ़ता तापमान इस संकट को और गंभीर बना रहे हैं। भूजल भंडार का हर स्तर पर क्षरण न केवल ग्रामीण आजीविका को कमज़ोर करता है बल्कि उन शहरी अर्थव्यवस्थाओं को भी प्रभावित करता है, जो अंततः इन्हीं जल संसाधनों पर निर्भर हैं। इसलिए जल संकट केवल पर्यावरण से जुड़ी चिंता नहीं, बल्कि देश की भावी क्षमता और सुरक्षा का भी प्रश्न है।

भविष्य की आवश्यकता है कि जल-बहुल खेती से आगे बढ़कर जल-संवेदनशील और जल-कुशल कृषि अपनाई जाए। सटीक सिंचाई, जलग्रहण क्षेत्रों का पुनर्जीवन, वर्षा जल संचयन, भूजल पुनर्भरण, कृषि वानिकी, प्राकृतिक खेती, खाद्य वन और जलवायु के अनुकूल फसल प्रणालियाँ मिलकर कृषि की एक नई सोच प्रस्तुत करती हैं। धरती में सहेजी गई पानी की हर बूंद खाद्य सुरक्षा को और मज़बूत बनाती है।

स्वस्थ खेत, स्वस्थ राष्ट्र

आधुनिक स्वास्थ्य व्यवस्था मुख्यतः बीमारियों के उपचार पर केंद्रित है, लेकिन अच्छे स्वास्थ्य की नींव व्यक्ति के डॉक्टर तक पहुँचने से बहुत पहले ही खेतों और भोजन में पड़ जाती है। भारत की प्राचीन मान्यता "आहार ही औषधि है" को आज आधुनिक पोषण विज्ञान भी स्वीकार करता है। स्वस्थ मिट्टी पोषक तत्वों से भरपूर फसलें देती है, विविधता से भरे खेत संतुलित आहार उपलब्ध कराते हैं और पौष्टिक भोजन दीर्घकालिक बीमारियों का बोझ कम करता है। इसलिए कृषि और स्वास्थ्य सेवा एक ही जैविक प्रक्रिया के दो परस्पर जुड़े छोर हैं जिन्हें पृथक नहीं किया जा सकता।

आज समाज अनेक बीमारियों से जूझ रहा है। भोजन से भरपूर कैलोरी तो मिल रही है, लेकिन पोषण लगातार घट रहा है जो कि एक सदी पहले की तुलना में मात्र 5 प्रतिशत रह गया है। भोजन में विटामिन, एंटीऑक्सीडेंट और क्षारीय तत्व लगभग नगण्य हो गए हैं। भोजन में मात्रा तो है, पर गुणवत्ता नहीं। वह धीरे-धीरे पोषणहीन होता जा रहा है।

कृषि का उद्देश्य केवल लोगों का पेट भरना नहीं बल्कि उन्हें पोषण उपलब्ध करना भी होना चाहिए। मोटे अनाज, दालें, फल, सब्जियाँ, देशी अनाज और विविध कृषि प्रणालियाँ पारिस्थितिक तंत्र को मज़बूत बनाने के साथ मानव स्वास्थ्य को भी बेहतर करती हैं। पुनर्योजी कृषि में किया गया प्रत्येक निवेश बीमारियों की रोकथाम में किया गया निवेश है, जो भविष्य की चिकित्सा लागत को कम करता है। साथ ही, स्वस्थ समाज के निर्माण में भी सहायक होता है।

खाद सुरक्षा में निहित राष्ट्रीय सुरक्षा

इतिहास इस बात का गवाह है कि सभ्यताएँ प्रायः तकनीक की कमी से नहीं, बल्कि विश्वसनीय खाद्य व्यवस्था बनाए रखने में विफल होने के कारण कमज़ोर पड़ती हैं। अनाज की कमी ने कई क्रांतियों को जन्म दिया है, सूखे ने लाखों लोगों को विस्थापित किया है और खाद्य महँगाई ने सरकारों तक को अस्थिर किया है।

जलवायु परिवर्तन, भू-राजनीतिक अनिश्चितताओं और कमज़ोर होती वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं के इस दौर में खाद्य सुरक्षा को देश की एक रणनीतिक संपदा के रूप में देखना आवश्यक है। किसी देश के पास उन्नत उद्योग, डिजिटल अवसंरचना और सैन्य शक्ति हो सकती है, लेकिन यदि उसकी कृषि व्यवस्था पर्यावरणीय दृष्टि से कमज़ोर हो जाए, तो वह असुरक्षित बना रहता है। भोजन कोई सामान्य वस्तु नहीं है, जिसे

वैश्विक संकट के समय बदला जा सके, बाद के लिए टाला जा सके या आसानी से आयात किया जा सके।

खाद्य सुरक्षा का भविष्य केवल अधिक अनाज उत्पादन में नहीं, बल्कि एक ऐसी सुदृढ़ कृषि व्यवस्था के निर्माण में है, जो जलवायु, पर्यावरण और अर्थव्यवस्था से जुड़े संकटों का सामना कर सके। इक्कीसवीं सदी में कृषि में निवेश अब महज आर्थिक प्राथमिकता नहीं बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा, जन स्वास्थ्य और सभ्यता की दीर्घकालिक स्थिरता में निवेश है। इस प्रकार खाद्य सुरक्षा ही आर्थिक सुरक्षा का आधार बनती है।

किसानः सभ्यता के संरक्षक

अर्थशास्त्र प्रायः किसान को केवल उत्पादक के रूप में देखता है, जबकि प्रकृति उसकी कहीं व्यापक भूमिका सामने रखती है। किसान मिट्टी का संवाहक, जल का रक्षक और जैव विविधता का संरक्षक होने के साथ-साथ पीढ़ियों से संचित ज्ञान की विरासत को भी आगे बढ़ाते हैं। बाज़ार खेत से निकलने वाले अनाज का मूल्य तो तय करता है, लेकिन खेत में सुरक्षित रह जाने वाली पारिस्थितिक संपदा को कोई मान्यता नहीं देता।

विडंबना यह है कि पूरे देश का पेट भरने वाले किसान स्वयं सबसे अधिक असुरक्षित हैं। जलवायु की अनिश्चितता, बाज़ार में उतार-चढ़ाव, कृषि लागत में वृद्धि, छोटी और बिखरी जोतें तथा श्रमिकों की कमी ने खेती की आर्थिक स्थिति को लगातार कमज़ोर किया है।

यदि कृषि को स्वस्थ राष्ट्र की आधारशिला बनाए रखना है, तो खेती को सम्मानजनक, आकर्षक और आर्थिक रूप से लाभकारी पेशा बनाना होगा। खेतों को बचाने की शुरुआत उन किसानों के सम्मान, सुरक्षा और समृद्धि से होगी, जो उन्हें अपने श्रम से सींचते हैं।

तकनीक और प्रकृति का तालमेल

कृषि के भविष्य को अक्सर पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक तकनीक के बीच चुनाव के रूप में देखा जाता है। लेकिन मानवता को पारिस्थितिकी और नवाचार में से किसी एक को चुनने की आवश्यकता नहीं है। ज़रूरत दोनों के बीच तालमेल स्थापित करने की है। तकनीक की सार्थकता तभी है, जब वह प्रकृति का स्थान लेने के बजाय उसकी क्षमताओं को बढ़ाए।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता, उपग्रह चित्र, ड्रोन, सटीक सिंचाई, मौसम पूर्वानुमान और डिजिटल बाज़ार कृषि संबंधी निर्णयों में बड़ा बदलाव ला सकते हैं। इनकी सहायता से किसान जल का बेहतर उपयोग कर सकते हैं, बर्बादी घटा सकते हैं, जलवायु संबंधी जोखिमों का पूर्वानुमान लगा सकते हैं और बाज़ारों तक अपनी पहुँच बढ़ा सकते हैं। समझदारी से उपयोग की गई तकनीक पर्यावरण पर पड़ने वाले दबाव को कम करते हुए कृषि उत्पादकता बढ़ा सकती है।

लेकिन तकनीक न तो जीवंत मिट्टी बना सकती है, न जैव विविधता को फिर से रच सकती है और न ही स्वस्थ पारिस्थितिकी तंत्र को बनाए रखने वाले जैविक संबंधों का स्थान ले सकती है। कोई एल्गोरिदम परागण करने वाले जीवों की जगह नहीं ले सकता, कोई कारखाना उपजाऊ मिट्टी नहीं बना सकता और कोई मशीन प्रकृति द्वारा लाखों वर्षों में विकसित की गई पारिस्थितिक जटिलता की नकल नहीं कर सकती। कृषि का भविष्य केवल अधिक उन्नत मशीनों में नहीं, बल्कि अधिक समझदार कृषि प्रणालियों में निहित है।

कृषि सफलता की नई परिभाषा

दशकों तक कृषि की सफलता को उत्पादन की मात्रा से आँका जाता रहा है। लेकिन आज केवल भरपूर उत्पादन पर्याप्त नहीं है। अधिक उपज देने वाला कोई खेत यदि भूजल को समाप्त कर रहा है, मिट्टी की उर्वरता घटा रहा है और पोषणहीन खाद्यान्न पैदा कर रहा है, तो उसे वास्तव में उत्पादक नहीं माना जा सकता। कृषि की सफलता का आकलन मिट्टी की सेहत, जल संरक्षण, खेत में पनपती जैव विविधता, सूखे, बाढ़ और कीट प्रकोप से निपटने की पारिस्थितिक क्षमता तथा खाद्य पदार्थों की पोषण गुणवत्ता के आधार पर भी होना चाहिए। कृषि की दीर्घकालिक निरंतरता के लिए ये सभी कसौटियाँ अत्यंत आवश्यक हैं।

खेतों को राष्ट्रीय पारिस्थितिक अवसंरचना के रूप में स्वीकार करने से सार्वजनिक नीति का दृष्टिकोण मूल रूप से बदल जाता है। उपजाऊ मिट्टी, स्वस्थ जलग्रहण क्षेत्र और संकटों का सामना करने में सक्षम कृषि क्षेत्रों को राजमार्गों, बंदरगाहों और डिजिटल नेटवर्क जितना ही रणनीतिक महत्त्व मिलना चाहिए, क्योंकि इन्हीं पर हमारी खाद्य सुरक्षा, जनस्वास्थ्य, जलवायु संबंधी संकटों से निपटने की क्षमता और आर्थिक स्थिरता टिकी है। कृषि की सच्ची सफलता केवल खेत से मिलने वाली फसल में नहीं, बल्कि कटाई के बाद मिट्टी में बची उस उर्वरता में भी है, जो आगे भी खेती को जीवन देती रहे। राष्ट्र का भविष्य केवल कारखानों में नहीं, बल्कि खेतों में भी गढ़ा जाता है।

नेतृत्व की ओर भारत

भारत जैसी विविध कृषि जलवायु परिस्थितियाँ, खेती की प्रणालियाँ और कृषि जैव विविधता बहुत कम देशों के पास हैं। यही विविधता भारत को न केवल अपनी विशाल आबादी की खाद्य आवश्यकताएँ पूरी करने, बल्कि दुनिया के अनेक देशों के लिए उपयोगी पुनर्योजी कृषि के मॉडल विकसित करने का अनूठा अवसर देती है।

हज़ारों वर्षों की कृषि परम्परा वाला भारत समय-समय पर कृषि क्षेत्र में बड़े बदलाव लाने की अपनी क्षमता सिद्ध कर चुका है। हरित क्रांति ने देश को खाद्यान्न के मामले में आत्मनिर्भर बनाया। आज मोटे अनाजों को बढ़ावा देने, मृदा स्वास्थ्य सुधारने, जलग्रहण क्षेत्रों के विकास, डिजिटल कृषि और प्राकृतिक खेती से जुड़ी पहलें अधिक सतत कृषि व्यवस्था की ओर बढ़ते भारत का संकेत देती हैं। जलवायु-अनुकूल खेती, पारंपरिक अनाजों और पुनर्योजी कृषि में बढ़ती वैश्विक रुचि ने भारत को ऐसे समाधान देने की मज़बूत स्थिति में ला दिया है, जो वैज्ञानिक रूप

से प्रभावी होने के साथ-साथ उसकी सांस्कृतिक और पारंपरिक जड़ों से भी जुड़े हों।

भविष्य में नेतृत्व उन्हीं देशों के हाथ में होगा, जो पारिस्थितिकी तंत्र को पुनर्जीवित करते हुए अधिक पोषक खाद्य का उत्पादन करेंगे। आधुनिक विज्ञान को पीढ़ियों से संचित पारिस्थितिक ज्ञान से जोड़कर भारत यह सिद्ध कर सकता है कि उत्पादकता और दीर्घकालिक स्थायित्व परस्पर विरोधी नहीं, बल्कि एक-दूसरे के पूरक लक्ष्य हैं।

सब्सिडी से संरक्षण की ओर

कृषि नीति के सामने चुनौती किसानों को सहायता देने की नहीं बल्कि यह तय करने की है कि किस प्रकार के प्रयासों को प्रोत्साहन दिया जाए। पहले कृषि नीतियों का उद्देश्य अधिकतम उत्पादन था, न कि संकटों का सामना करने की क्षमता बढ़ाना। अब कृषि उत्पादकता के साथ मृदा स्वास्थ्य में सुधार, भूजल पुनर्भरण, जैव विविधता संरक्षण, जल के कुशल उपयोग, कार्बन संचयन और खाद्य पदार्थों की पोषण गुणवत्ता को भी निवेश एवं प्रोत्साहन का आधार बनाया जाना चाहिए।

इस बदलाव के लिए कृषि, जल, स्वास्थ्य, पर्यावरण, ग्रामीण विकास और जलवायु नीतियों के बीच बेहतर समन्वय आवश्यक है। अलग-अलग क्षेत्रों में बँटी प्रशासनिक व्यवस्था के स्थान पर ऐसा एकीकृत नीतिगत ढाँचा होना चाहिए, जो कृषि को पारिस्थितिक, आर्थिक और मानव कल्याण के संगम के रूप में स्वीकार करे।

बाज़ार व्यवस्था को भी पर्यावरण और प्रकृति के हितों के अनुरूप बनाना उतना ही आवश्यक है। जो किसान प्राकृतिक तंत्रों को पुनर्जीवित करते हैं, उन्हें इसका आर्थिक लाभ मिलना चाहिए। इसके लिए पुनर्योजी खेती अपनाने, विविध फसलें उगाने, प्राकृतिक संसाधनों और जैव विविधता के संरक्षण तथा जलवायु संबंधी चुनौतियों से निपटने की क्षमता बढ़ाने वाले प्रयासों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

सार्वजनिक खरीद, कृषि ऋण, बीमा और अनुसंधान की नीतियाँ भी ऐसी हों, जो प्राकृतिक संसाधनों के तात्कालिक दोहन के बजाय उनके दीर्घकालिक संरक्षण और संवर्धन को बढ़ावा दें। कृषि नीति का उद्देश्य अब केवल वर्तमान पीढ़ी की खाद्य आवश्यकताओं को पूरा करना नहीं बल्कि भावी पीढ़ियों के लिए अधिक समृद्ध विरासत छोड़ना होना चाहिए। इसके लिए मिट्टी में ऑर्गेनिक कार्बन की मात्रा बढ़ाने, भूजल पुनर्भरण में सुधार, रसायनों पर निर्भरता घटाने, जैव विविधता बढ़ाने, ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन कम करने और पोषण विविधता को प्रोत्साहित करने वाले प्रयासों को बढ़ावा देना होगा। इस दिशा में सभी को अपनी-अपनी भूमिका निभानी होगी।

सरकार को नीतियों और प्रोत्साहनों के माध्यम से, किसानों को अपनी कृषि पद्धतियों से, उपभोक्ताओं को खरीद संबंधी निर्णयों से, वैज्ञानिकों को उपयोगी अनुसंधान से, शिक्षकों को पाठ्यक्रम के माध्यम से तथा बच्चों और समुदायों को प्रत्यक्ष अनुभवों से इस बदलाव में योगदान देना होगा। इसके लिए कृषि नीति को केवल खेती तक सीमित न रखकर सभ्यता के भविष्य से जुड़ी नीति के रूप में देखना होगा।

खेत बचाएँ, भविष्य बचाएँ

हर सभ्यता ने अपने स्मारकों, उद्योगों और तकनीकी उपलब्धियों पर गर्व किया है, लेकिन कोई भी सभ्यता केवल इनके बल पर कायम नहीं रह सकी। जब खाद्य और अन्य पुनर्योजी संसाधनों का उत्पादन आर्थिक तथा पारिस्थितिक दृष्टि से संभव नहीं रह जाता तो ये उपलब्धियाँ भी खंडहर में बदल जाती हैं। समृद्ध वही सभ्यताएँ हुईं, जिन्होंने अपनी मिट्टी की उर्वरता, जल की विश्वसनीय उपलब्धता, मज़बूत कृषि व्यवस्था और स्वस्थ पारिस्थितिकी तंत्र को बनाए रखा।

खेत केवल खाद्य उत्पादन का स्थान नहीं है। यह वह धरती है जहाँ सूर्य का प्रकाश पोषण में बदलता है, वर्षा जीवनदायिनी जलधाराओं का रूप लेती है, जैव विविधता सहनशीलता का आधार बनती है और मानव का श्रम सभ्यता का निर्माण करता है। एक स्वस्थ खेत एक साथ पौष्टिक भोजन, स्वच्छ जल, संतुलित जलवायु, समृद्ध जैव विविधता, ग्रामीण समृद्धि और स्वस्थ समाज का सृजन करता है। मानव द्वारा निर्मित बहुत कम संस्थाएँ ऐसी हैं, जो इतने व्यापक और दीर्घकालिक लाभ एक साथ प्रदान करती हों।

'खेत बचाएँ, भविष्य बचाएँ' केवल एक नारा नहीं, बल्कि इस बात का संकल्प है कि हम कैसा भविष्य बनाना चाहते हैं। यदि हम खेतों को केवल अधिकतम उत्पादन करने वाली फैक्ट्रियों की तरह देखते रहे, तो उस प्राकृतिक पूँजी के समाप्त होने का खतरा है, जिस पर हमारी समूची समृद्धि निर्भर करती है। लेकिन यदि खेतों को फिर से ऐसे जीवंत पारिस्थितिकी तंत्रों में बदलें, जहाँ उत्पादन और प्राकृतिक पुनर्जीवन के बीच संतुलन हो तो हम अपने भविष्य के हर आधार को मज़बूत कर सकते हैं।

मानवता का भविष्य प्रकृति और विकास में किसी एक को चुनने से नहीं, बल्कि यह समझने से सुरक्षित होगा कि वास्तविक और स्थायी विकास वही है, जो प्रकृति विरुद्ध नहीं अपितु उसके साथ सामंजस्य स्थापित कर आगे बढ़ता है। खेत वह स्थान है जहाँ सूर्य का प्रकाश अन्न में बदलता है, वर्षा फसल बनकर जीवन को पोषित करती है और हर नई ऋतु में मनुष्य तथा प्रकृति की साझेदारी फिर से जीवंत होती है। इसलिए खेत को बचाना केवल कृषि को बचाना नहीं, बल्कि उन आधारों की रक्षा करना है, जिन पर सभ्यता का अस्तित्व और उसकी समृद्धि टिकी है।

भविष्य ऐसी कृषि में निहित है, जो उत्पादन बढ़ाने के साथ मिट्टी, जल और जैव विविधता को भी समृद्ध करे। वही समाज भविष्य की चुनौतियों का सामना कर सकेगा, जिसका प्रकृति पर दबाव कम होगा और जहाँ खेत से थाली तक भोजन की दूरी भी घटेगी। अतः खेत केवल एक व्यापारिक प्रतिष्ठान अथवा आर्थिक उपक्रम नहीं, अपितु सभ्यता की सुरक्षा और राष्ट्र के भविष्य का रणनीतिक आधार है। ❑